हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 06

* रीति काल परंपरा में घनानंद का महत्व *

घनानंद रीतिकाल के एक विलक्षण कवि हैं। रीतियुग में कविता हृदय की नैसर्गिक अनुभूति का विषय न रह गई थी। वह आश्रयदाताओं के मनोविनोद का साधन-मात्र बन गई थी। कविगण अपनी प्रतिभा शक्ति पर विश्वास खोकर 'आचार्य' कहलाने की महत्व कांक्षा से पीड़ित हो रहे थे। ऐसे युग में घनानंद अपनी पीड़ा से रोते हैं, किराए के आँसू नहीं बहाते। रीतिकाल परंपरा में घनानंद का अपना महत्व है उनका प्रेम संबंधी दृष्टिकोण रीति कवियों से सर्वथा भिन्न है उनका प्रेमानुभूति स्वच्छंद है इस स्वच्छंद प्रेमानुभूति के कारण उनका काव्य-कौशल और उनकी काव्य-भाषा सर्वथा नयी और सर्जनात्मक दिखाई पड़ती है।

रीतिकालीन काव्यादर्श काव्य के बाह्य रूपों को संवारने-सजाने के ही थे। अनुभूति पक्ष पर जोर नहीं था। अनुप्रासमयी शब्दावली, छंदों में गति (यति)-लय का सुष्ठु विधान, दोषों का परिहार आदि गुण श्रेष्ठ कविता के लिए अनिवार्य माने जाते थे।

रीतिकालीन कवि साहित्यशास्त्र की बंधी-बंधाई श्रेणियों का आलम्बन लेकर श्रृंगार-रस का उपस्थापन कर रहे थे। वस्तुतः रीतिकालीन कविता साहित्यशास्त्र की रूढ़ियों पर अत्यधिक आश्रित और स्रष्टा के व्यक्तित्व के तिरोधान की कविता है। उसमें आँखों पर कम, कानों पर ज्यादा भरोसा किया गया है। इसके विपरीत घनानंद ने स्वीकार अनुभूतियों पर विश्वास किया और अपने हृदय की भोगी हुई पीड़ा को अपनी कविताओं में रूपायित किया। वे ऐसे लोगों पर दया प्रकट करते हैं जो शास्त्र या बुद्धि की आँखों से प्रेम के हर्ष-विषाद का अनुमान किया करते हैं। प्रेमानुभूति की साक्षी तो उनकी आँखों भी हो सकती हैं जिनके हृदय में चाह की मीठी पीर उठती हो। रीति कवि भावों को बुद्धिगम्य समझकर उसी से उन्हें काव्य निबद्ध करते थे। घनानंद ने सच्ची अनुभूति को बुद्धि से परे सिद्ध किया है-

जौं लौं जागैं न भूल, तौ लौं सोवै सुरति-सुख,
वही होय अनुकूल, और भूलैं सुख-सुधि सबैं॥

प्रेमानुभूति में बुद्धि दासी है और रीझ पटरानी, तत्व का बोध 'बौरानि' में ही होता है।

घनानंद बुद्धिवादी कवियों के प्रेम-कथन को नीर-मंथन के समान निष्फल बताते हैं उन्हें वाणी के रहस्य से अनभिज्ञ, ठंडे हृदय के तथा जड़ कहा है वे लोग कृत्रिम प्रेम का निर्वाह करते हैं उनसे कवि का मेल नहीं हो सकता –

बात के दैसते दूरि परें जड़ता निपरें सिपरे हिय दाहैं।
चित की आँखिन लीनें विच्छिद महारस रूप सवाद सराहैं।
नेह कथैं, सठ नीर मथैं, हठ कै कुप्रेम को नेम निबाहैं।
क्यों घनआनँद जीजैं सुजाननि मौं अमिलें मिलिबो फिरि चाहैं॥

प्रस्तुतकर्ता

दिनांक
03/10/2020

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो॰ नं॰ – 8292271041
ईमेल – benamkumar15@gmail.com